International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्तराम बी.ए. के साहित्य में महिला विमर्श

कंवल किशोर,
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

सन्तराम बी.ए. का जन्म 14 फरवरी सन् 1887 में तात्कालिक संयुक्त पंजाब के होशियारपुर शहर की सन्निधि में आवासित छोटे से गाँव 'पुरानी बसी' में हुआ था। उनके पिता श्री रामदास जी गोहिल अपने जातीय धंधे मिट्टी के बर्तन बनाने से इतर विदेश में जाकर व्यापार करने का छोटा सा कारोबार करते थे , वहीं उनकी ममतामयी माता श्रीमती मालिनी देवी सहृदया , सुशीला एवं करुणामयी गृहिणी थी। चूंकि उनके पिता जी पड़ोस के विदेशी क्षेत्रों में व्यापार के हेतु आते -जाते रहते थे, इसलिए उन्हें शिक्षा के महत्व का पर्याप्त भान था , और उनकी यही जागरूकता उनकी अपनी संततियों को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु प्रेरित भी करती रही थी , जिसके परिणाम-स्वरूप सन्तराम बी.ए. व उसके सभी भाई-बहन आधारभूत आवश्यक शिक्षा से वंचित नहीं रहे। सन्तराम बी.ए. के अग्रज लक्ष्मणदास तो वर्तमान अंग्रेजी सरकार के शिक्षा विभाग में जिला उप-निरीक्षक के पद पर भी नियुक्त हुए थे, वहीं वे स्वयं उच्चकोटि के लेखक, शिक्षाविद व समाज-सुधारक बने।

यद्यपि सन्तराम बी.ए. का लेखन-फलक बहुत विराट है , तथापि सन्तराम बी.ए. ने अपने जीवन में शताधिक पुस्तकों व सहस्रों लेखों की सृजना की , जिनमें उनके महिलाओं सम्बन्धी विचार, उद्गार, सद्भावनाएँ एवं संवेदनाएँ सर्वत्र बाहुल्य में निदर्शित जो जाती हैं। सन्तराम बी.ए. एक सुशिक्षित, सहृदय, विचार-सम्पन्न एवं भविष्य-द्रष्टा व्यक्तित्व के धनी साहित्यिक थे , इसलिए उन्होंने प्रारम्भ से ही अनुभव कर लिया था कि किसी भी देश की उत्तमोन्नति उसकी 'आधी आबादी' अर्थात महिलाओं के समानान्तर विकास के बिना असम्भव होती है। उनकी लेखनी से प्रणीत पुस्तकें मेरे जीवन के अनुभव , हमारा समाज, सुखी परिवार, सेवा-कुंज, सद्गुणी पुत्री, नीरोग कन्या, सुखी जीवन का रहस्य, सुशील कन्या, महिला मणिमाला आदि में उनके विचारों का स्फुरण विद्यमान है, जिसके माध्यम से उन्होंने मातृ-शक्ति की आवश्यकताओं , अधिकारों एवं उनके प्रति पुरुषों एवं समाज के कर्तव्यों की सर्वत्र बानगी दर्शित होती है। सन्तराम बी.ए. जिस युग में जन्मे एवं कर्मस्थल में अपनी जीवनचर्या शुरू की उस समय देश विदेशी गुलामी की बेड़ियों में तो जकड़ा हुआ था ही, अपितु सामाजिक प्रवंचनाओं, धार्मिक विडंबनाओं एवं व्यवहारिक कुप्रथाओं के धूम्र में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पूर्णतः प्रच्छन्न था, जिसका सर्वाधिक कुप्रभाव देश की स्त्रियों पर पड़ता था। अनपढ़ता , सामाजिक बंधन एवं धर्म की वर्जनाएँ सब महिलाओं पर ही जबरन लादी या थोपी जाती थी , जिन्हें सन्तराम बी.ए. अपनी स्वाभाविक मानवीय संवेदना में सहन नहीं कर सकते थे , इसलिए उनकी कलम ने महिलाओं के पक्ष में तमाम महिला -विरोधी विद्रूपताओं, कलुषों, बंदिशों व थोपित कुरीतियों के विरुद्ध निश्छल, साहसपूर्ण एवं संकल्प-सिक्त लिखा।

सन्तराम बी.ए. केवल लेखनी के कागज़ी महारथी नहीं थे , वरन व्यवहार में भी 'कहे को करने वाले' सत्यमूर्ति पुरूष थे। स्त्रियों के मान -सम्मान और शिक्षा -दीक्षा की उन्हें सर्वदा चिंता रहती थी, इसका आँकलन उनकी मुँह बोली बहन पूर्णदेवी के सहायतार्थ अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति में भी उसकी शिक्षा हेतु सहायता करने के निश्चय से लगाया जा सकता है, जिसका विवरण उनके आत्मकथ्य 'मेरे जीवन के अनुभव' में इस प्रकार से प्राप्त होता है, "इसके कुछ समय उपरांत पूर्णदेवी के पति का देहांत हो गया। वह विधवा हो गई। यह सन् 1930 की बात है। मैं पुनर्विवाह कर चुका था। अब वह मेरे पास लाहौर आ गई। मैंने उसे कन्या -महाविद्यालय, जालन्धर में भर्ती कराने का विचार किया , ताकि वहाँ उच्च -शिक्षा प्राप्त कर अपने पाँवों पर खड़ी हो सके। मेरी आर्थिक अवस्था उन दिनों यद्यपि बहुत अच्छी न थी तो भी मैं उसकी पढ़ाई का सारा व्यय वहन करने को तैयार हो गया।"1

उस समय का समाज स्त्रियों को एक वस्तु की तरह मानता या समझता था तथा पशु की मानिंद उसे अपने अनुसार हाँकना जरूरी समझता था , और उसके आनाकानी करने पर उसे निर्दयता से पीटने या मारने की भी एक तरह उसे आज़ादी मिली हुई थी , परन्तु सन्तराम बी.ए. इस दुष्ट-परिपाटी के सम्पूर्णतः विरुद्ध थे। उनके इस विचार का उद्घाटन उनकी आत्मकथा में लिखी इस टिप्पणी से हो जाता है, यथा, "स्त्रियों को पीटने वाले पति और बच्चों को पीटने वाले माता -पिता मुझे बहुत बुरे लगते हैं। मैं अपने सामने किसी स्त्री को और बच्चे को पिटता देखना सहन नहीं कर सकता। मैंने भी दो बच्चे पाले थे। पर मुझे याद नहीं कि मैंने कभी उनको पीटा हो।"2

उस समय पुरुषों की मानसिकता इस कदर संक्रमित थी कि वे अपनी पत्नी के बीमार होने पर अस्पताल ले जाकर चिकित्सा करवाना या इस परिस्थिति में उनकी देखभाल करना भी हीन समझते थे। परन्तु सन्तराम बी.ए. ने अपनी शिक्षा एवं जागृति से इस मूढ परम्परा को न केवल तोड़ा अपितु अन्य गृहस्थों को भी उत्तम राह दिखाई। इस सन्दर्भ में उनके आत्मकथ्य की यह टिप्पणी द्रष्टव्य है, "उन दिनों किसी को अस्पताल में भरती करना बहुत बुरा समझा जाता था। पति भी विशेषतः तरुण पति अपनी पत्नियों की सेवा -सुश्रूषा करने में लज्जा का अनुभव किया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करते थे, जिससे लोग उन्हें स्त्री-दास और कामासक्त न समझने लगें। मैंने इस झूठी लोक -लाज का परित्याग कर स्थिर भाव से आपनी पत्नी के रोग में सेवा की इसका दूसरे लोगों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। गाँव की स्त्रियाँ प्रसन्न हुई। मेरे बाद कई दूसरे नवयुवकों ने भी अपनी पत्नी को अस्पताल में रखकर उनके रोग का उपचार करवाया।" 3

सन्तराम बी.ए. ने जाति-पाँति के कोढ़ को राष्ट्र का सबसे बड़ा विनाशक न केवल बताया है बल्कि अपने तथ्यों, साक्ष्यों एवं उद्धरणों द्वारा इसकी घातकता को उजागर इसके उन्मूलन का उपाय भी सुझाया है। सन्तराम बी .ए. की यह अवधारणा भी निर्मूल नहीं थी कि इस जाति -पाँति की कुटिल-प्रथा से स्त्रियों की विशेषतः दुर्गति हुई है। उनके मान -सम्मान व उत्थान का रास्ता अवरुद्ध हुआ और उनके हक-अधिकारों को पूर्णतः कुचलकर उन्हें केवल एक निरीह जीव की भाँति जीने पर बाध्य कर दिया गया। सन्तराम बी .ए. की निम्नोक्त अभिव्यक्ति उपर्युक्त संदर्श को प्रासंगिक कर देती है, अस्तु, "जात-पाँत से स्त्री-जाति की घोर हानि हुई है। कई बिरादरियों में लड़के कम और लड़कियाँ अधिक हैं। वहाँ लड़की वालों को भारी दहेज देने पड़ते हैं। बंगाल प्रभृति प्रदेशों में अपने माता-पिता को दहेज की चिंता से मुक्त करने के उद्देश्य से स्नेहलता जैसी कई लड़कियों ने आत्महत्या कर ली है। जिन बिरादरियों में लड़के अधिक और लड़कियाँ कम हैं वहाँ लड़कियाँ मोल बिकती हैं और व्यभिचार फैलता है। बुड्ढों के साथ अल्पवयस्क कन्याएँ ब्याही जाती हैं। अनमेल विवाह से गृहस्थी नरक-धाम बन जाती है।" 4

वैसे भी विशेषतः भारतीय समाज की संरचनात्मक स्थिति पुरुष प्रधान है इसलिए उसने सभी सामाजिक नियम और धार्मिक विधान भी सर्वथा स्वयं की हित साधना के अनुरूप ही निर्मित किए हैं, इसलिए उनके इन नियम-कानूनों में स्त्रियों के उत्थान का अवकाश या तो है ही नहीं या केवल नाम-मात्र है। सन्तराम बी.ए. इन कुव्यवस्थाओं को स्वयं एक पुरुष होते हुए भी अस्वीकार कर इनके जंजाल को समाज -मेधा के समक्ष रखकर इनके अवसान का मार्ग प्रशस्त करते प्रतीत होते हैं। पुरुष मनोवृत्ति अहंकारी व अधिनायकवादी होती है , जिसके फलस्वरूप व स्त्री को अपने आधिपत्य की वस्तु के रूप में ही देखने की कामना रखता है। सन्तराम बी.ए. अपने इस वक्तव्य से पुरुष की इस मनोदशा को अनावृत करते हुए स्त्रियों की पराधीन स्थिति का उद्घाटन कर देते हैं , यथा, "क्योंकि यह संसार पुरुष-निर्मित है, इसलिए पुरुष के मस्तिष्क को पुरुष -सुलभ अहंकार ने जकड़ रखा है। वह स्त्री और पुरुष को बराबर नहीं वरन दासी और स्वामी समझता है। पुरुषोचित परम्परा से अंधा हो जाने के कारण वह नारी के मूल्य-निर्धारण में असमर्थ है। इसलिए वह स्त्री को अपने विचार में अपने सुख के लिए सेविका और गृहिणी से बढ़कर कोई स्थान नहीं देता। यदि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वह किसी प्रकार का भी अपनी श्रेष्ठता का भाव प्रकट करती है तो पुरुष को यह अस्वाभाविक प्रतीत होता है। वह संदेह करने लगता है कि यदि मैंने जागरूकता में तनिक -सी भी ढील की तो वह मुझे अपनी लपेट में लेकर आत्मसात कर लेगी।" 5

संसृति स्त्री व पुरुष दोनों के सम्मिलित संगुम्फन से विकास को अग्रसर होती है , परन्तु पुरुष के लालच , अहम व स्वार्थ ने उनकी समता -सिद्ध प्राकृतिक जोड़ी में स्त्री को हीन बनाकर अपने अधीन करने का अप्राकृतिक कार्य किया है। सन्तराम बी.ए. न केवल इस तथ्य से अभिज्ञ हैं अपितु अपने लेखन एवं वक्तव्यों में उनकी समानता व समानाधिकार का वर्णन करते नहीं चूकते हैं। ऐसी ही उनकी एक वक्तृता द्रष्टव्य है, "सबसे मुख्य बात है कि पुरुष को यह समझ लेना चाहिए कि पुरुष और स्त्रियाँ वस्तुतः ऐसे प्राणी हैं जो अपने -आपमें अपूर्ण हैं। जीवन को एक पूरा वृत बनाने के लिए उनका इकट्ठा होना आवश्यक है।" 6

सन्तराम बी.ए. नारी-शक्ति का आह्वान करते हैं , और उन्हें उनकी शक्ति का स्मरण कराते हुए देशोत्थान की ओर प्रवृत्त करने की सफल चेष्टा करते हैं। उनकी कहानी -परक उद्धारक पुस्तक 'सेवा-कुंज' का यह वक्तव्य इस उत्तरोक्ति की पुष्टि कर देता है, यथा, "हे स्त्रियो! आप सोचती हैं, हम असहाय हैं, अल्प हैं और दैनंदिन जीवन की परिस्थितियों में इतनी जकड़ी हुई हैं कि हम कुछ नहीं कर सकती, पर यह आपका भारी भ्रम है।

यदि आप एक बार अपने प्रकृत -स्वरूप को पहचान जाएँ तो संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं जो नारी शक्ति के लिए असाध्य है।" 7

सन्तराम बी.ए. केवल सुधारक और साहित्यकार ही नहीं थे अपितु अपने परिवेश के पारखी एवं समय के द्रष्टा विदुष भी थे , इसलिए उनकी लेखनी ने प्रत्येक समकालीन मुद्दे का यथासम्भव प्राकट्य कर उसके निवारण का सदा प्रयास प्रदर्शित किया था। सन्तराम बी .ए. यथासम्भव अनेक स्थानों पर पुरुष की परुष मानसिकता को न केवल उजागर किया है बल्कि उनकी संकुचितता को भी प्रत्यक्ष किया है, उपरिलिखित जे प्रमाण में उनकी निम्नलिखित टिप्पणी प्रस्तुत है , "पुरुष की प्रायः धारणा रहती है कि मैं ऐसी लड़की से विवाह कर सकता हूँ जो बहुत अधिक चतुर न हो। वह समझता है कि ऐसी स्त्री को मैं अपने पीछे चला सकता हूँ , ऐसी स्त्री का अपना मत कुछ नहीं होता। वह स्त्रियों के अधिकारों के लिए भी नहीं झगड़ती , इसलिए पुरुष को विश्वास हो जाता है कि वह अपने को मेरे हितों के अधीन कर देगी और केवल घर -गृहस्थी में ही लीन रहने में संतुष्ट रहेगी।" 8

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्तराम बी.ए. की सामयिक स्थिति आज की तरह आधुनिक व लोकतांत्रिक नहीं थी , फिर भी अपनी सुबुद्धि , जागृति, उच्च चिंतना के कारण वे अपने समय से बहुत आगे व प्रबुद्ध थे , इसलिए उन्होंने धारा के विपरीत स्त्रियों के उत्थान व जरूरी हकों की पुरजौर पैरवी की है , साथ पुरुषों से भी उनके समर्पण का मूल्य उनकी सहयोगिता के द्वारा चुकाने के आह्वान किया है। उनके लेखन में उनकी यह बानगी उत्तरोक्त प्रसंग को प्रामाणित कर देती है , अस्तु, "प्रश्न होता है कि स्त्री अपने जीवन में कोई काम करने की अभिलाषा क्यों न करे? यदि संतान के आरंभिक पालन-पोषण के बाद वह किसी दूसरे काम में लगना चाहती है तो पुरुष को चाहिए कि स्त्री जो कुछ करना चाहती है उस में उसको सहायता एवं प्रोत्साहन दे कर कम से कम उस के त्याग का बदला तो चुकाए जो स्त्री को जीवन में करना पड़ा है।" 9

सन्तराम बी.ए. ने पुरुष की स्वार्थी मानसिकता को बेपर्दा करने में कोई लाग -लपेट नहीं रखी है और न ही उनके वक्तव्यों में किसी प्रकार की कोई हिचकिचाहट है , वो लिखते हैं और निडरता से लिखते हैं, उदाहरण प्रस्तुत है, "अनेक पुरुष समझते हैं कि पत्नी हमारी वैसी ही सम्पत्ति है जैसी की घोड़ी या गाय , हम जैसी भी चाहे उससे सेवा ले सकते हैं , हमें अधिकार है कि उसे आदेश दें कि तुम अमुक कपड़ा पहनो और अमुक न पहनो, अमुक स्त्री से बात करो और अमुक से न करो, अमुक तमाशा देखो और अमुक न देखो। वे समझते हैं कि स्त्री हमारी मुफ्त की नौकरानी है।" 10

सन्तराम बी.ए. ने समय के हालात व उसमें व्याप्त विडंबनाओं को गहनता व मंथन से समझा, जाना व परखा था जिससे वे इन विडंबनाओं के निवारण हेतु अपनी आवाज दृढ़ता से बुलंद कर सके। वे पुरुषवादी सोच और संकीर्णता से सर्वथा मुक्त एक सहृदय , प्रबुद्ध एवं समभावी व्यक्तित्व से अनुप्राणित सज्जन थे, जिन्होंने अपनी लेखनी व करनी दोनों से स्त्रियों सम्बन्धी हकों, अधिकारों एवं अहर्ताओं के हेतु सदा आवाज उठाई थी।

सन्दर्भ सूची:-

1. सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव, गौतम बुक सेंटर-दिल्ली, सन् 2008, पृष्ठ-42
2. वही, पृष्ठ-59
3. वही, पृष्ठ-61
4. एस. एस. गौतम व अजय कुमार - सम्पादक, जाति आखिर क्यों नहीं जाती , गौतम बुक सेंटर- दिल्ली, सन् 2013, पृष्ठ-54

5. सन्तराम बी.ए., सुख और सफलता के साधन, हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट-लिमिटेड- दिल्ली-32, सन् 1963, पृष्ठ-77
6. वही, पृष्ठ-82
7. सन्तराम बी.ए., सेवा-कुंज, विश्वेश्वरानंद प्रकाशन होशियारपुर, सन् 1958, पृष्ठ-25
8. सन्तराम बी.ए., हमारा समाज, सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली- 63, तृतीय संस्करण- 2007
9. सन्तराम बी .ए., सुखी परिवार , विश्वेश्वरानंद प्रकाशन होशियारपुर , सन् 1936, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ-37
10. सन्तराम बी .ए., सुखी परिवार , विश्वेश्वरानंद प्रकाशन होशियारपुर , सन् 1936, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ- 49